TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4304**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

षडा॥सू
१

ए६०॥श्रीवीतरागाय नमः॥ । अरिहंत विहरमाण नइं माहरउ नमस्कार हउ । सर्व सिद्ध नइं माहरउ नमस्कार हउ॥ । पंचविध आचार पालइ ते आचार्य नइं माहरो नमस्कार । २५ गुणधारक उपाध्याय नइं माहरो नमस्कार हउ॥

ए६०॥ ॐ नमः॥ नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरिआणं। नमो उवज्झाया

नमस्कार हउ॥ । अढीद्वीप लोक नइं विषइ सर्व साधु नइं माहरो नमस्कार । ए पंच परमेष्टि नमस्कार के हवो छइ॥ । सर्व पाप नइं विनाश नो करणहार छइ । सर्व मंगलीक माहिं

णं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचनमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च

प्रथम मंगलीक एह छइ एतलावु मंगलीक रूपी श्री सूत्र आपत माहि । संपदा ८ । पद ९ । लघु अक्षर ६१ । गुरु ७ । पांच इंद्री नइं संवरइं वश आणकरणहार

सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं। संपदा ८। पद ९। लघुअक्खर ६१। गुरु ७। पंचिंदिअसंव

तिमज । नवप्रकार ब्रह्मचर्य नी गुपति नी धरणहार॥ । च्यार विध कषाय थकी मुकाणो छइ । ए अढार गुणि करी संयुक्त

रणो। तह नवविह बंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को। इअ अट्ठारसगुणे

सहित छइ १ । पंच महाव्रत नइं करी संयुक्त सहित छइ । पंचविध आचार पालवा नइं विषइ समर्थ छइ॥ । पांच समिति करी समतु । त्रिण गुप्ति करी गुप्त

हिं संजुत्तो। १। पंचमहव्वयजुत्तो। पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो १

छत्तीसगुणो गुरु मज्झ॥२॥ गाथा २ पद ८ गुरु १० लघु अक्षर ७० सर्व अक्षर ८० इच्छामि ख

मासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि गुरु ३ लघु २५ सर्व अक्षर

२८ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिआवहिअं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमि

उं॥१॥ इरिआवहिआए विराहणाए॥२॥ गमणागमणे॥३॥ पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरिअक्क

मणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ॥५॥

2

१ केंद्रीयश रीर | इंद्रिय श्रात्मा बेंद्रीय प्रमुख | तेंद्रियनाश को | चउरिंद्रियन यन | पंचिंद्रियक र्ले | ५ | पीडिया | एकत्र कीस

एगिंदिआ | बेइंदिआ | तेइंदिआ | चउरिंदिया | पंचिंदिआ | ५ अभिहया वत्तिआ

धूलिइं लेई मास्या | परस्पर गात्र भीकरी | आपस्पर्शी | सर्व प्रकारि पीडिया | निश्चेष्टकीधा | आसना | एक स्थानक थ

लेसिआ | संघाइआ | संघट्टिआ | परिआविआ | किलामिआ | उद्दविआ | ठाणाउ ठा

कीधीकइस्थानक इ किया | जीवितव्यथकी | विराधना | तेपापथिकी मिथ्याइ: कृतहत | ७ | पूर्वोक्तपापश्रतं उत्त रीकरण

णं संकामिआ | जीविआउ ववरोविआ | तस्स मिच्छामि दुक्कडं ७ | तस्स उत्तरीकर

पायच्छित्तनिर्मलीकरण | विशेषशुद्धकरण | विसल्यनकरण | पापकर्मापारनाकरण | नि

णेणं | पायच्छित्तकरणेणं | विसोहीकरणेणं | विसल्लीकरणेणं | पावाणं कम्माणं | नि

र्घातिककेइण | काउस्सग्गकरवं | संपदा | ८ | पद | ३२ | अक्षरगुरी २४ | लघुअक्षर १७५ | सर्वाक्षर १९९

ग्घायणट्ठाए | ठामि काउस्सग्गं | संपदा ८ | पद ३२ | अक्षर गुरु २४ | लघु अक्षर १७५ | सर्वाक्षर १९९ २

ऊर्ध्वश्वासलेता माहरउ | काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ | नीचुश्वासमुकतां माहरु काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ | उधरसआवइ माहरउ काउस ग्ग भ्रग्न मा गुहउ | छीक आविस्मा माहरउ काउस्सग भ्रग्न मा गुहउ | बगासुं आविस्मा माहरउ काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ

[illegible] | अन्नत्थ ऊससिएणं | नीससिएणं | खासिएणं | छीएणं | जंभाइएणं

उडकारे आवइ माहरो काउसग्ग | अधोवायवायनइनीस रवइ माहरउ काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ | भमल आवइ माहरु काउस ग्ग भ्रग्न मा गुहउ | पित्तनी मूर्च्छा आवइं माहरउ काउस्सग भ्र ग्न मा गुहउ | सूक्ष्म शरीर हलावइ करी माहरु काउ स्सग भ्रग्न मा गुहउ

उड्डुएणं | वायनिसग्गेणं | भमलिए | पित्तमुच्छाए | सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं

सूक्ष्मश्लेष्मचलावइ करी माहरउ काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ | सूक्ष्मदृष्टिचलावइ करी माहरउ काउसग्ग भ्रग्न मा गुहउ | एआदि देइ आगारइं करी माहरो काउसग्ग

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं | सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं | एवमाइएहिं | आगारेहिं

भागो नही | विराधउ नही | इस्युं मुझ प्रतइं काउस्सग हुइ | जां लगइं अरीहंत नइं | भगवंत नइं

अभग्गो | अविराहिउ | हुज्ज मे काउस्सग्गो | जाव अरिहंताणं | भगवंताणं | 3

नमस्कार करीनमो अरीहंताणं इहवुं कही | न पारउं | तां लगइं शरीर | एक गामि रावउं | मौन्यपणइं सहीतरहिउं | ध्यानि सहित रहिउं | ५ | आत्मा व्रतिवोसि रावउं | काउसग करउं न पलइं वत्ती तु ते ×

नमुक्कारेणं | न पारेमि | ताव कायं | ठाणेणं | मोणेणं | झाणेणं | अप्पाणं वो

सर्व लोक प्रति। उद्योतना करणहार। धर्मतीर्थना करणहार। जिनरागद्वेष रहित। एहवा अरिहंत चउवीस तीर्थंकरस्तवसुं॥

सरामि॥ ह्व॥ लोगस्स उज्जोयगरे। धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं।

चउवीस तिचउवीस इसम तिकाजइ केवली हवा॥ पहिला तीर्थंकर श्री ऋषभदेव। बीजा श्री अजितनाथ नइ वांदउं। त्रीजा श्री संभव। चोथा श्री अभिनंदनस्वामी। पांचमा श्री सुमतिनाथ। छठा श्री पद्मप्रभस्वामी॥

चउवीसंपि केवली॥१॥ उसभमजियं च वंदे। संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्प

सातमा श्री सुपार्श्व। जिन। आठमा श्री चंद्रप्रभ। इति वांदउं॥२॥ नवमा श्री सुविधिनाथ एहवुं नाम। अनइ बीजुं नाम पुष्पदंत। दसमा श्री शीतलनाथ। इग्यारमा श्री श्रेयांस। बारमा श्री वासुपूज्यस्वामी

हं सुपासं। जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं। सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं

तेरमा श्री विमलनाथ। चउदमा श्री अनंतजिन। पनरमा धर्मनाथ। सोलमा श्री शांतिनाथ नइ वांदउं। सतरमा श्री कुंथुनाथ। अढारमा श्री अरनाथ। उगणीसमा श्री मल्लिनाथ। वीसमा श्री मुनिसुव्रत

च। विमलमणंतं च जिणं। धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं। वंदे मुणि

प्रति वंदुं॥ एकवीसमा श्री नमिजिन। बावीसमा श्री अरिष्टनेमि प्रति वांदउं। त्रेवीसमा श्री पार्श्वनाथ। तथा चोवीसमा श्री वर्द्धमान स्वामी॥४॥ इसी परि मइं नाम ग्रहणपूर्वक करी स्तव्या॥

सुव्वयं। नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं। पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभि ३

फेडि आटल्या पापनी रज अनइ मल जेणइ। क्षय गयां जरा मरण जेह प्रति॥ चउवीस तिचउवीस जिनवर। सेष तिकाउ इह थया। ते तीर्थंकर मुझ पसनइ सुप्रसन्न।

थुआ। विहुयरयमला। पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा। तित्थयरा मे प

थाउ॥५॥ नामि करी स्तव्या। वांद्या॥ पूज्या। जे तीर्थंकर लोक मांहि उत्तम सिद्ध जाणता॥ आरोग्य नीरोग बोधबीज तीर्थ लाभ उत्तम। तिस मध्ये तेह थउ

सीयंतु॥५॥ कित्तियवंदियमहिया। जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं

समाधि वर प्रधान उत्तम दिउ मुझ प्रति॥६॥ चंद्रमा थी अतिहिं निर्मलतर॥ आदित्य कहीइ सूर्य तेह थकी अधिक प्रकाशना करणहार छइ॥ समुद्र

समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा। आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सा

वर समुद्र मणसमुद्र तेह गंभीर छइ॥ ते सिद्ध मोक्ष वसति दिउ मुझ नइ। ७॥ इति॥ सर्व लोक मांहि अरिहंत नां चैत्य प्रतिमा॥

गरवरगंभीरा। सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥ ३॥ सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं क

काउस्सग्ग करूं॥ वांदतां जे फल होइ ते एकाउसग्ग फल तेह थी मुझनइ। हे क्षमाश्रमण वांदुं छुं। इच्छा करी नि हे भगवन्।

रेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तियाए। इच्छामि खमासमणो। इच्छाकारेण संदिस 4

आदेश्व । दि३ । चैत्यवंदन करूं । बेकहउ । वेवीतराग उत्कोके स्वा बोडाग नइ विषइं चिंतामणि रत्न समान बोल्या अन्न जिणि नाथ बो । जगनाथ फहउ । जगनीर ह्यामाक रणहार कहु ।

इत्थ भगवती स्य वंदन करूं अंजं । जगचिंतामणि जगह नाह । जगगुरु जगरक्खण

जगनइं विषइ । जगतनइं विषइं सा । जगतामहना सावद्याणवा । अहापद पर्वत नइ विषइं । रूपा कहूं जेहनो । आठकर्मना

बंधवसमानवो । वाहसमानकहउ । नइ विषइ माहा विचक्षण । विनासना

जगबंधव जगसत्थवाह । जगभावविअक्खण । अट्ठावयसंठविअरूव । कम्मट्ठवि

करणहा रकइ । एहवा चउवीस इ जिनवर जयवंता वरउ । अप्रतिहत आग नकइ जहनी । हणपोनमाय जीतउनमाय । १ । सरत पएरवतपमहाविदेह ५ एउ ५ कर्मभूमि

णासण । चउवीसंपि जिणवर जयंतु । अप्पडिहयसासण । १ । कम्मभूमिहिं कम्म

विषइ । पहिलासंघयणना धणी । उत्कृष्टकालि १७० । तीर्थंकर । विचरता पामीइं अजीतनाथ नइ वारइ । अनइं ए

भूमिहिं पढमसंघयणि । उक्कोसय सत्तरिसउ । जिणवराण । विहरंत लब्भइ । नव

कोडि केवली पामी इ । अनइ कोडि सहस्र नव साधु उपामीइं जाणिइ । संप्रति कहितां हवणां नइं कालइं वीस तीर्थंकर छइ मुनीश्वर ।

कोडिहिं केवलि । कोडिसहस्सनवसाहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि । बिहुं ४

बिहुं कोडि केवलज्ञान ना धणी पामीइ । श्रमण कोडि सहस्र पामीइ । स्तुवीइ नीत्य विहाणइ सूर्य नइ । २ । जयवंता वहउ ।

कोडिहिं वरनाण । समणह कोडिसहस्सदुअ । थुणिज्जइ निच्चविहाणि । २ । जयउ

स्वामी । श्री ऋषभदेव शत्रुंजय तीर्थ नइ विषइ । उज्जितकइ गिरिनार पर्वत नइ विषइ । प्रभु श्री नेमिजिन जयवंता वरतु । जयवंत उवरतो श्री महावीरदेव साचोर नगर नो मंडण आभरण । भरु अछ

सामीअ रिसह सत्तुंजि । उज्जिंत । पहु नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरिमंडण । भरु

नगर नइ विषइ श्री मुनिसुव्रतस्वामि जय वंतावरतु । मुहरि नगर नइ विषइ । श्री पार्श्वनाथ दुख दुरित नो खंडण हार जयवंता वरतउ । अपरविदेह नइ विषइ । जे तीर्थंकर । च्यार

अच्छहिं मुणिसुव्वय । मुहरि पास दुहदुरिअखंडण । अवरविदेहिं जे तित्थयरा । चि

दिशि विदिशि नइ विषइ । जे केइ तीर्थंकर । अतीतकालनइ विषइ । अनागतकालनि विषइ । वर्तमानकालनि विषइ । तेसर्वे जिन तीर्थंकर । ३ । सत्ताणुइ हजार ।

हुं दिसि विदिसि जिंकेवि । तीआणागयसंपइअ । वंदु जिण सव्वे वि । ३ । सत्ता

लाख । छप्पन । आठ कोडि । बत्रीस सइं अनइं बियासी । त्रिणि लोक नि विषइ चे त्य प्रासाद वांदउ एतला

णवइ सहस्सा । लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ । बत्तीससयबासिआइं । तिअलोए चेइ

|४| |१नरसिंकोडि|. |कोडिबयालीस| |अठावनलाख| ° |छत्रीसहस्रअनइं

एवंदे|४| पनरसकोडिसयाइं| कोडीबायालसहस्सअडवन्ना| छत्तीससहस्सअ

उपरिअइ|| एतलांसास्वतांबिंबप्रतिप्रणमु||५| जंकिंचिकहतां जेकोइ| स्वर्गेपातालेमनुष्यलो
सी| |नमस्कारकरउं|| नामइंतीर्थ| कनइविषइ|

सिआइं| सासयबिंबाइं पणमामि|५| जंकिंचिनामतित्थं| सग्गेपायालिमाणुसेलो

गे||जिनबिंब| |तेसर्वप्रतिमांप्रतइं नमस्कार करउं| ६ |नमःस्कारहउ| |अरिहंततीर्थंकरजितघातीअरिहंता लोकनइंविषइ...

ए| जाइं जिणबिंबाइं| ताइं सव्वाइं वंदामि|६| नमुत्थुणं| अरिहंताणं|

भगवंतज्ञानवंतछइ| |धर्मनीआदिमाकरणहारछइ| |तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहारछइ| |स्वयमेवपोतानीमेजइप्रतिबुद्ध| |पुरुषमांहिउत्तम| |पुरुषमांहिंसीहसमामहइवासीहजिमशूरो

भगवंताणं| आइगराणं| तित्थयराणं| सयंसंबुद्धाणं| पुरिसुत्तमाणं| पुरिस

नइंस्वैतिमसनवंतकवादीनामदरूपी|| |पुरुषमांहिवरप्रधानपुंडरीककमलसमानछइ| |पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानछइ| |सर्वलोकमांहिउत्तमछइ|

सीहाणं| पुरिसवरपुंडरिआणं| पुरिसवरगंधहत्थीणं| लोगुत्तमाणं||

लोकनानाथछइ| |लोकप्रतिंहितनाकरणहारछइ| |लोकप्रतइंप्रदीपदीवासमान०| |लोकप्रतिंउद्योतनाकरणहार०| |अभयदाननादातारछइ| |जीवनेज्ञान

लोगनाहाणं लोगहिआणं| लोगपईवाणं| लोगपज्जोअगराणं| अभयदयाणं| च

रूपलोचननादातार०| |मोक्षमारगनादातार०| |सर्वजीवनइंसरणनादातार०| बोधिबीजसमकितनाआपनार०| |चारित्ररूपधर्मनाआपनार| |देशधर्मसर्वधर्मनाउपदेशनादेणहार०

क्खुदयाणं| मग्गदयाणं| सरणदयाणं| बोहिदयाणं| धम्मदयाणं| धम्मदेसया

|धर्मनानायक०| |धर्मरथनासारथीजिमघकमारनइंप्रह्या| |धर्मवरप्रधान||चारगतिविनाशकर| |चक्रधारचक्रवर्तिप्रह्या| |अविनाशीज्ञानदर्शनना

णं| धम्मनायगाणं| धम्मसारहीणं| धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं| अप्पडिहयवरना

धरणहार| |विगतगयाछइछद्मस्थतानाजेहमां| |रागद्वेषरहितजिनप्रह्या| |अनइंरागद्वेषपरजिनावइ| आपणपइंसंसारसमुद्रतरयापरजीवनेसंसाररूपसमुद्रतारवानेसमर्थ०|

णदंसणधराणं| विअट्टछउमाणं| जिणाणं जावयाणं| तिन्नाणं तारयाणं|

बुझ्यापरनइंबुझववानइंसमर्थ०|| |आपणपइंसंसारथीमुकाणापरनइंमुकाववासमर्थ०|| |सर्वजाणइ| |सर्वदेखइ| |उपद्रवरहित| |अचलचलइनही|

बुद्धाणं बोहयाणं| मुत्ताणं मोअगाणं| सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं| सिवमयल|

6

रूजरो गरहित । अनंतज्ञान दर्शन संयुक्त । क्षयर हितः । व्याबाधा रहित । फरीनइं जिहांथी आववुं नही । एहवी सिद्धिगति नामइ जे स्थान । तीणइं स्थानकिं संप्राप्त थया छइ

मरुअं । मणंत मक्खयमव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपत्ता

तेजिन प्रति माहरु नमस्कार हउ । भय जीत्या छइ जेणइ । जे अतीत कालइं सिद्ध थया । जे थासिइ सिद्ध अनागत कालइं

णं । नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा ॥ जे अ भविस्संति णागए का

सांप्रत वर्त्तमान काले वर्त्तमान तीर्थं करइ छइ । ते सर्वेनइं मन वचन कायाइं करी वांदुं छुं ॥ ३ ॥ संपदा ९ । गाथा ३ ॥ पद ३३ । गुरु ३३ ।

ले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ ३ ॥ संपदा ९ गाथा ३ पद ३३ गुरु ३३

लघु २६४ । अक्षर २९७ । अरिहंत नां चैत्य निमित्त । काउस्सग करुं । वंदन वर्त्तनी वांदतां जे फल होइ तेह काउसग इं होज्यो ।

लघु २६४ ॥ अक्षर २९७ ॥ अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआ

पूजा कीधइ जे पुण्य होइ तेह काउसग्ग इं होज्यो ॥ वस्त्र आभरणादिक इं सत्कार कीधइ जे पुण्य होइ तेह काउसगइं० । सन्मान स्तवन कीधइ जे पुण्य होइ तेह काउसगइं० ॥ बोधिलाभ पामि जे पुण्य होइ तेह काउसग इं होज्यो

ए ॥ पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्तिआए ॥ सम्माणवत्तिआए ॥ बोहिलाभवत्तिआए ६

निरुपसर्ग मोक्ष पामइं जे पुण्य होइ तेह काउसगइं हो० । श्रद्धा वधती । मेधा विवेक वधती । धीरता वधती । धारणा अरिहंतना गुण अविसारवइ करी । जिनना गुण वार वार चिंतवइ करी । एह बोलइ वधते काउसग करुं छुं

निरुवसग्गवत्तिआए ॥ सद्धाए मेहाए ॥ धिइए धारणाए ॥ अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ॥

ठामि काउस्सग्ग करुं । ऊसासादिक आगार विना । अर्द्ध पुष्करवर द्वीप । धातकी खंड संबंधी । जंबूद्वीप संबंधी । भरत ५

ठामि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुद्दीवे अ भरहे

ऐरवत ५ । महाविदेह ५ । ए १५ ठामे धर्मनी आदिना करणहार प्रति । नमस्कार करुं । १ । अज्ञानरूप अंधकारना समूह प्रति विध्वंसना करणहार एहवा सिद्धांत छइ । देवताना समूह

रवयविदेहे ॥ धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स ॥ सुरगण

नरेंद्र चक्रवर्त्ति प्रमुख पूजित । सीमाधर मर्यादाधारक एहवा सिद्धांत प्रति वांदुं । दूर कीधा छइ मोहनो जाल जेणइ । १ । जन्म । जरा मरण शोक ते

नरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे ॥ पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ १ ॥ जाईजरामरण

विणासकरणहार । कल्याणकारि उ संपूर्ण । विस्तीर्ण । अनेरूप सुखना करणहार । देव वैमानीक । दानव नरेंद्र चक्रवर्त्ति समूह ए सर्वे पूजित

सोगपणासणस्स ॥ कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंद

सिद्धोतउइ॥ |एह श्रुधर्मतेह संसार जही करी मिंऊ णाप्रमाद करइ॥३॥ |सिद्ध रूपमइं लोलोकरेउ| अनमा लक्षको| नमस्कार करउंछउं| जिनम तनइं
एतलइ नकरइ प्रमाद सम्यग् जीव॥

गणछिअस्स॥ धम्मस्स सारमुवलंभे करे पमायं॥३॥ सिद्धे भो पयओ नमो जिणमए
|सदा संयमनी नंदी कहइ ताहइ छइ| |देवावै मानीक| नागकुं मार| किंनर व्यंतर ए हेजासमूहइ| |सावइ साविंउ जिनउइ सिद्धांतधारि रूप| |ज्ञानरूप लोकछे सि धांतमांहिर हिउछइ॥

नंदी सया संजमे॥ देवंनागसुवन्नकिंनरगणस्सब्भूअभावच्चिए॥४॥ लोगो ज
पज्जा| त्रिभुवन रूप| मर्त्य मनुष्य लोक अहे| असुरकुमार प्रमुख अधोलोक उपलक्षणथी देवलोक ए त्रिणलोक रूप| सिद्धांत कीजाणी| एहबो धर्म सिद्धांत छइ| शाश्वतउ वर्त्तउ॥

त्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ
परवादिन जयकरो| दिन दिन प्रति ज्ञानादि वृद्धि पाउ॥ | एहवुं श्रुत सिद्धांत भगवंत आराधना निमित्त काउस्सग्ग करूं| |वंदन वर्तीता फल होइ ते पए काउस्सग्ग फल होज्यो॥

धम्मुत्तरं वड्ढउ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं॥ वंदणवत्तिआए॥
सर्वकर्म रहित थयाते सिद्ध| ज्ञानवंत नइ॥| सर्व संसारनइं पारि पुहता तेहनइ॥| चउद गुणठाणानी श्रेणि चडी लोकनइ| |मस्तकि गया पुहता तेहनइ॥| नमस्कार हउ|

सिद्धाणं॥ बुद्धाणं॥ पारगयाणं॥ परंपरगयाणं॥ लोअग्गमुवगयाणं॥ नमो ७

एहवा सर्व सिद्ध प्रति सदा य| |१| |जे देवाधि देव| |जेहनइ| |देवता कर जोडीनइ नमस्कार करइ॥| |ते देवाधि देव| |इंद्रे वांदइ पूजितइ॥|

सया सव्वसिद्धाणं॥१॥ जो देवाण वि देवो जं देवा पंजली नमंसंति॥ तं देवदेवमहिअं॥ सि
मस्तकि करी वांदउं श्री महावीर प्रति| |२| |एक पणि नमस्कार| |जिन सामान्य केवली| |वर्धमान स्वामीने तेमांहि वृषभ समान श्री व| |र्धमान प्रति संसार समुद्र थकी|

रसा वंदे महावीरं॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो॥ जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स॥ संसारसाग
|तारइ नर पुरुष अथवा नारी स्त्रीनइ॥| |३| |गिरिनार पर्वतनइं मस्तकइ| |दिक्षा ज्ञान निर्वाण जेहना तिहां थया|

राउ॥ तारेइ नरं व नारिं वा॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे॥ दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स॥ ॥४॥ तं ध
ते धर्मचक्रवर्ति| |श्री अरिष्टनेमि प्रति नमस्कार हउ करउं॥| |४| |च्यार| |आठ| |दस| |बि| |एह कुण ऋषभादिक सिं अष्टापद तीर्थे नमस्कार करउं॥| |जिनव रचउ

म्मचक्कवट्टिं॥ अरिट्ठनेमिं नमंसामि॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो अ वंदिआ॥ जिणवराचउ
वीस| परमार्थ निष्ठितार्थ थया ते सिद्ध मुझनि सिद्धि मोक्ष प्रति दिउ॥| |५| |वैयावच्च नउ करणहार| |शांति नउ करणहार|

वीसं॥ परमट्ठनिट्ठिअट्ठा॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥५॥ वेआवच्चगराणं॥ संतिगराणं॥ 8

आरधवा नमति॰

समकदृष्टिप्रतिसमाधिनोकरणहारगोत्र ॥ तेनिमित्तकाउस्स ॥ उसासादिकआ । नमस्का । अरिहंतसिद्धआचार्यउ
वयकृत्वकेअरीयक्षणीप्रमुखस्मरण ॥ ।सग्गाकरूं ॥ गारिनागइनही ॥ रहउ । पाध्याय ।

सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं । करेमिकाउस्सग्गं । अन्नत्थ० नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय

सर्वसाधु प्रति ॥ संसाररूपदावानल । हेभगवंततेजलपाणी । मोहरूपधूलीजे । हेभगवंततेवा । मायारूपजेपृथ्वीते
ताहादाहनइविषइ ॥ ।समानछइ । धूलीतेहरवानइ विषइ । यरासमानछइ । विदारवानइ ॥

सर्वसाधुभ्यः ॥ संसारदावानलदाहनीरं । संमोहधूलीहरणेसमीरं । मायारसादारण

मेरुपर्वतनी पेरेधीर छइ ॥ २

हेभगवंतउत्कृष्ट । एहवाश्रीमहावीर । धूलीलावतजेकेहवु । लोकम । जेनम । देवताव । दानवमनुष्य । तेहनामुकुटपी
तहलसमानछइ । प्रतिनमस्कारकरुं । छइगिरिसारकहेतां॰ । हीत । ला । मानीक । नातेस्वामी । कोजली ।

सारसीरं । नमामिवीरंगिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन । चूलाविलोल

कमलनी । तेणिकरीशोभितथा । संपूरितकह । अभिनतनम । मनोवांछितजेहेतथी । विशेष । नमस्कार । तेजिनरा
अश्रेणि । रणछइजेहना॰ । तांपूरयांछइ । तांलोकनइ॰ । पूरांथयांछइ । प्रकारइ । करउछउ । उना ।

कमलावलिमालितानि संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि । कामंनमामिजिनराज

पदकमल । २ । ज्ञानिकरीअ । वरप्रधानजे । तेहजरूपनीरपाणीइंकरी । जीवदया । नीरं । लहरीछइजेह
तेहप्रति । गाधसीरछइ ॥ पदनीश्रेणि ॥ अभिरामशोभइछइ । रूप । तर । नइविषइ ॥

पदानितानि । २ । बोधागाधंसुपदपदवी । नीरपूराभिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललहरीसंग ८

संगमिकरीअगा । चूलिकारूपवे । घणाजेगमरूपम । तेणइकरीसं । जेहनुपार । एहवुवरप्रधानवीरना । आदरसाथ
धअपाररूपाद । लाछइजेहनइ । णिरूपीआरन ॥ कीर्णव्याकुलछइ । नपामीइ ॥ आगमरूपसमुद्रतेनइ । सहीत
हछइजेहनउ ॥ विषइ ।

मागाहदेहं । चूलावेलंगुरुगममणी । संकुलंदूरपारं । सारंवीरागमजलनिधिंसाद ९

छलीपरइसेवुं । ३ । मूलथीजेच । कमलनापराग । तेहनाघणाजे । तिहांजेभमरी । चपलजेभमरी । तेहनाझं
छइ । लतीकलना । रजनाकणीआ । परिमल । श्रेणि ॥ कारशब्द

रंसाधुसेवे । ३ । आमूलालोलधूली । बहुलपरिमला । लीढलोलालिमाला । झंका

आदिं सारमनो । निर्मलदलपत्रछइजे । भूमिकातिहांनिवासछइ । शोभानासमूहतेणइ । वरप्रधानकमलछइ
ज्ञप्रहवां । हनातेहकमलमध्ये । आगमरूपदेवीनउ ॥ करीसारमनोहरछइ । हाथिछइजेहनइ ॥

रारावसारामलदलकमलागारभूमीनिवासे । छायासंभारसारेवरकमलकरे

मनोहरउज्जल । अभिरामकह । वाणीनासमुहरूप । भवसंसारवि । देहउउ भवतिहेदेवी । सारप्रधा । ४ ॥ जेतलाचित्य
हारपंक्तिकरी । तांशोभइछइ ॥ शरीरछइजेहनु । रहरूपीउवर । नवर ॥ । छइ ।

तारहाराभिरामे । वाणीसंदोहदेहेभवविरहवरंदेहिमेदेविसारं । ४ ॥ जावंतिचे

उर्द्धलोकइ । अधोलो । तिर्यक्लोकिं । तेसर्वभावसहित । इहांरह्योथकोतिहांरह्याभगवंतनां
कइ । वांदउ । चैत्यप्रतिवांदउछउ ॥ । ५ ।

इआइं । उड्ढेअअहेअतिरिअलोएअ । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं । ५ ।

9

वांदुं छउं। हे खमाश्रमण। नमस्कार करवा। शरीरनी शक्ति। पापव्यापार निषेधकरी नइं। मस्तकिं करी वांदउं छउं। जे केटला एक भूमि मांहि

च्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। जावंत के

साधु। भरत। ऐरवत। महाविदेह ५ ५ ५ नर कर्मभूमि मांहि। तेसर्व नइं। प्रणाम नमस्कार करउं। मन वचन काया करी त्रिविधे करी हीतवइ ते साधु प्रतें नमस्कार

वि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं

एक कउं २। जे उपसर्गनउ हरणहार। पार्श्व नाम यक्ष। ते पार्श्वनाथ प्रति वांदुं हुं। पणि श्रीपार्श्वनाथ केहवु छे। आठ कर्मघन कठिन तेह थकी मुकाणा छइं। विषधर सर्प विषकी तिर्यंच नाथ की मिथ्यात्व रूप विषनउ नाश करणहार छइ

२४। उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर विसनिन्नासं

वरतमान काली सुख। परं पाइ सुख मंगलीक कल्याण नुं आवास छइ। १। विषधर स्फुलिंग नामइ मंत्र जे। कंठनइ विषइ धरइ। जे मनुष्य सदीव निरंतर। तेहनइं

मंगलकल्लाणआवासं।१। विसहरफुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स

ग्रह रोग मरगी नइं। दुष्ट ज्वर जाइ उपशांति प्रति। २। वेगलउ रहउ ते मंत्र। पणि तुझ नइ प्रणाम नमस्कार। घणुं फल दाइक छइ।

गहरोगमारी दुट्ठजरा जंति उवसामं।२। चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामो वि बहुफलो

मनुष्य तिर्यंच मांहि ने जीव। पामइ नही। दुःख दोर्गत्य प्रति। ३। ताहरूं सम्यक्त्व पामइ। चिंतामणि कल्पवृक्ष थकी।

होइ। नरतिरिएसु वि जीवा पावंति न दुक्खदोगच्चं।३। तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि

अधिक तेणइं करी। पामइं निर्विघ्न पणइं। जीव अजरामर स्थानक प्रति। ४। इसी परिं स्तव्यउ त्रैलोक्य व्यापरित मोटा यश

कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं।४। इअ संथुओ महा

मनुष्य। भक्तिना समूह तेणइ पूरित हइडइ करी। तउ देव देज्यो बोधबीज नी प्राप्ति। भवि भविं। श्रीपार्श्व जिनचंद्र ५

यस भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचंद।५।

जयवंतो। श्री वीतराग देव। जगत्रिणा गुरु। हउ मुझनइं ताहरा प्रभाव थकी। भगवंत भवनी नि वैराग्य। करा ग्रह त्याग मुगति कारण मार्ग नुं सारिपणुं हउ।

जयवीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ।

वांछित फलनी सिद्धि। १। लोकनां विरुद्ध नो त्याग। माता पिता दिकनी पूजा परउपकारी पणुं अपर नां अर्थ कार्य करवउं। सद्गुरु नो योग नइं

इट्ठफलसिद्धी।१। लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो त

(left margin:) आजीवका नी चिंता नउ इ ते माटि धनादिकनी प्राप्ति हो ज्यो।

(right margin:) सो मान के वली मांहि इमा समान। संसारनं विरति पाना छाय।

तेहनाचरणनी सेवा। आसंसारावस्था लगइ अखंड अ संसार माहिं वसउं त्यां लगी अ खंड २। वारिउं नइ यद्यपि तउ हइ पणि। नि आणा बंधु बंधु। हे वीतराग माहरा सिद्धांतनइ।

वंणसेवणा। आभवमखंडा ३। वारिज्जइ जइ वि निआणबंधणं। वीअराय तुह

विषइ। तह वि। मुझ। हाज्यो सेवा। भवि भवि तम्हारा चरणकमलनी सेवा। ३। दुःखनो क्षय। कर्मनो क्षय।

समये। तह वि मम हुज्ज सेवा। भवे भवे तुम्ह चलणाणं। ४। दुक्खक्खउ कम्मक्खउ

समाधि मरण। बोधिबीज बोलाश। संपजउ। मुझनइ एह। हे नाथ तुझनइं प्रणाम करवे करी। ४। सर्व

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ। संपज्जउ मह एअं। तुह नाह पणामकरणेणं। ५। सर्व

मंगलीक माहिं उत्कृष्ट मंगलीक। सकल कल्याणनुं कारण। सर्व धर्म माहिं प्रधान। एहवउं जिनशासन जय वंतउ ५।

मंगल मांगल्यं। सर्वकल्याणकारणं। प्रधानं सर्वधर्माणां। जैनं जयति शासनं। ५। इच्छा

हे क्षमाश्रमण। वांदवा। शरीरनी शक्ति। पाप व्यापार निषेध करी। अनुमति द्यउ। आगन्या द्यउ। मर्यादा थकी। अवग्रह द्यउ।

मि खमासमणो। वंदिउं। जावणिज्जाए। निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। १०

गुरु शरीरनी। अधोकाय गुरुना पग। माहरइं मस्तक लगाडि करी फरसतां। खमवउं हे भगवन। किलामना थई। मन किलामना रहीत। थ

निसिही। अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं। ब

तइ सुख करी। दिवस अतिक्रम्यो। रात्रि अतिक्रमी। पख्य अतिक्रम्यो। चउमासी अतिक्रमी।

हुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो। राइ वइक्कंता। पक्खो वइक्कंतो। चउमासी वइक्कंता।

संवत्सर अतिक्रम्यो। हे भगवन तुम्हनइ संयम यात्रा सुखे। हे भगवन तुम्हनइं इंद्रिय असमाधइ। हे क्षमाश्रमण खमावुं छउं। जिकाई दिवस संबंधी अपराध अतिक्रम

संवच्छरो वइक्कंतो। जत्ता भे। जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो। देवसिअं व

मउ छउ। अवश्य करणी माटइ दीवश संबंधी तेत्रीस आशातना थकी पडिकमुं। हे क्षमाश्रमण। दिवस संबंधि। आशातना कीधी ते

इक्कमं। आवस्सिआए। पडिक्कमामि। खमासमणाणं। देवसिआए। आसायणाए

तेत्रीस मांहि एकइ कीधी। जे काइ मिथ्या भावि। दुःकृत मनि। दुःकृत वचनि करी। दुःकृत काया करी। क्रोधि

तित्तीसन्नयराए। जंकिंचि मिच्छाए। मणदुक्कडाए। वयदुक्कडाए। कायदुक्कडाए। कोहाए।

अहंकारी मानि करी | माया इं करी | लोभइ करी | अतीत अनागत वर्त्तमान सर्वकालइं | सर्वमिथ्योपचारादि किंधां टइ विनयइ करी | सर्वधर्म अति

माणाए | मायाए | लोभाए | सव्वकालिआए | सव्वमिछोवयाराए | सव्वधम्माइ

क्रमवइ करी | असी आशातनाइं करी | जे मइं अतीचार कीधउ | तेह थकी हे क्षमाश्रमण | पडीकमुं

क्कमणाए | आसायणाए | जो मे अईआरो कउ | तस्स खमासमणो पडिक्क

निंदुं | आत्मसाखि | गरहुं गुरुसाखि | आत्मा ते अतीचारथकी वोसराउं | ३ || हे भगवन् सामायिक व्रत करउं | साव

मामि | निंदामि | गरिहामि | अप्पाणं वोसिरामि || ३ || करेमि भंते सामाइअं | सा

द्य जोग व्यापार प्रति पचखुं | जाव विधि लगइ पर्युपासना सेवा करउं | द्विविध | त्रिविधइं करी | मनिं करी

वज्जं जोगं पच्चक्खामि || जाव नियमं पज्जुवासामि || दुविहं तिविहेणं | मणेणं |

वचनि करी | काया इं शरीरिं करी | न करउं | न कराववउं | ते पूर्वकृत पाप हे भगवन् | पडिकमुं निंदुं | निंदउं आत्मसाखि | गरहुं गुरुसाखि |

वायाए | काएणं | न करेमि || न कारवेमि || तस्स भंते | पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि | ॥

ते पाप प्रति आत्मा वोसिराउं | हे भगवन् इच्छाकार पूर्वक आदेश दिउ | दिवसना अतीचार आलोउं | वांछउं |

अप्पाणं वोसिरामि | इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोएमि | इच्छं | आ

आलोउं | जे मइं दिवसिं हि | अतीचार कीधा | काया इं शरीरइं करी | वचनि करी | मनि करी | सिद्धांत विरुद्ध उत्सूत्र करी | उन्मार्ग

लोएमि जो मे देवसिउ अईयारो कउ || काईउ | वाईउ | माणसिउ | उस्सुत्तो | उम्म

करी | अकल्पनी इ करी | अकरवा योग्य | दुष्ट ध्यानि करी | दुष्ट चिंतवइ करी | अनाचार करी | अणवांछिवइ करी |

ग्गो | अकप्पो | अकरणिज्जो | दुज्झाउ | दुव्विचिंतिउ | अणायारो || अणिछियव्वो ||

अश्रावकनइ योग्य करणी इं करी || ज्ञाननइ विषइ | तिम दर्शन नइ विषइ | देशविरतनइ विषइ | सिद्धांत नइ विषइ | समक्यासामायिक इ | त्रिणि गुप्तिनइ विषइ |

असावगपाउग्गो | नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते | सुए सामाइए | तिण्हं गुत्तीणं |

च्यार कषाइ | पांच अणुव्रतइं | त्रिणि गुणव्रतइं | च्यार शिक्षाव्रत नइ विषइ ||

चउण्हं | कसायाणं | पंचण्हमणुव्वयाणं | तिण्हं गुणव्वयाणं | चउण्हं सिक्खावयाणं | बा

वारसेव । श्रावकधर्मनइ विषइ । जं खंडिउं । जे विराधिउं । ते सवि निमिछामिदुक्कड हउ ॥ ४ ॥ सर्व

स्स विरस्स । सावगधम्मस्स । जं खंडिअं । जं विराहियं । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥ सव्व

दिवसमांहि । दुष्टचिंतवुं । दुष्टभाष्यउ । दुष्टचेष्टा शरीरि कीधी हुइ । इच्छाकारपूर्वक भगवन् मुज आदेश दिउ । तेमिछा

स्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ । दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह । इच्छं त

मिच्छामि दुक्कडं । हे भगवन् इच्छाकारपूर्वक आदेश दिउ । जं सावधान हउं । दिवसमांहि अप

स्स मिच्छामि दुक्कडं । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओहं । अब्भिंतर देवसि

राध खामवानइ । वांदु । खामु । दिवससंबंधी । जिकांई अप्रीतिउपजाइ । अधिक प्रीति । भातनइ विषइ पाणीनइ विषइ

यं खामेउं । इच्छं खामेमि देवसियं । जं किंचि अपत्तियं । परपत्तिअं । भत्ते पाणे

विनय वेयावच्चनइ विषइ । आलापसंलापनइ विषइ । उच्चआसनइ । समआसनि । अंतरालि भाषिउं बोलतां विचइ भाषउ ।

विणए वेयावच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे । अंतरभासाए । १४

उपरांति विस्तारि भाषिउं । जिकांई मइं । विनय रहित हुउ । सूक्ष्म हुउ । बादर हुउ । हे बहुश्रुत तुम्हे जाणउ । हुं न

उवरिभासाए । जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं । सुहुमं वा बायरं वा । तुब्भे जाणह । अहं

जाणउं । ते सवि मिछामिदुक्कड हउ ॥ ६ ॥ आचार्य । उपाध्याय । शिष्य । साधर्मिक । एक गुरुना । बहु शिष्यादिक

न याणामि । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६ ॥ आयरिय उवज्झाए । सीसे साहम्मिए कुलगणे य

नाश । प्रवर्ततिं जे मइं कषा । ते सर्व मनि वचनि कायाइ करी खमावउं ॥ १ ॥ एवमेव कर्मो से सर्व श्रमणसंघनइ । भगवंतनइं अंजलि

जे मे केइ कसाया । सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स । भगवओ अंज

मस्तकि । चढावी । सर्व अपराध खमावु । ते सर्व तु अपराध हुं पणि खमउं ॥ २ ॥ सर्व जीवराशिनइ

लिं करिय सीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरा

भावधर्मनइ विषइ । थापु । आपणउं चित्त । सर्व अपराध खमावउं । ते सर्व तु अपराध हुं पणि खमउं ॥

सिस्स । भाव धम्म निहिय निय चित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहयं पि

|करुं भगवन पोषध व्रत| |आहार पचखउं| |देसथी| |सरवथी| |शरीरनासकार सर्वप्रकारकउं| |ब्रह्म

भावश्र व्यापार

व||करेमिभंतेपोसहं|आहारपोसहंदेसउसवउ|सरीरसक्कारपोसहंसवउ|बंभ
चर्यप्रकारकउ सर्वथी| |अव्यापारसर्वथीप्रकारकउं| |व्यापार कारू| |पोषधव्रत उउ| बीउ| जांलगइदिवस| जांलगइ अहोरा

चेरपोसहंसवउ|अवावारपोसहंसवउ|चउविहेपोसहेठामि|जावदिवसं|अहो
त्रि तांलगइं सेवा पर्युपासनीकरुं| |द्विविध| |त्रिविधइं करी| |मनइकरी| वचनइ करी| |कायाइं करी| |नकरउ| |नकरावउं|

रत्तंपज्जुवासामि|दुविहं तिविहेणं|मणेणं|वायाए|काएणं|नकरेमि|नकारवेमि
सगवन ते पूर्वकीत पाप डिक| |मुनिवर्ततउ| |निंदउ आतम साखि| |गरहउ गुरु साखि| |तेपापरूप आतमावोसि रावउं|| ब|| साहसागरचंद्र

तस्संतेपडिक्कमामि|निंदामि|गरिहामि|अप्पाणंवोसिरामि|ब|सागरचंदो|
कोम| |देवदिसा| |तेथन्य सुदरशन| |जेहनि पोषधप्रतिमा| |अखंडित| |जीवितव्य अंतइ पणि पडी नही|
देव| राजा|

कामो|चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो| जेसिं पोसहपडिमा|अखंडिआ जीविअंतेवि|| १३

॥ अभियह ॥ ॥ पंडानही ॥

|धन्यप्रशंसा सुलसा श्राविका| |आणंद कामदेव श्रमुख| |जेहनइ प्रसंसि भगवंत| |दृढव्रतपणुं|

धन्नासलाहणिज्जा|सुलसा आणंदकामदेवाय|जेसिंपसंसइ भयवं|दढव्वयत्तं
श्रीमहावीर देव|| २||

महावीरो|२|पोसहविधिलीधउ|विधिपारिउ|विधिकरतां|जे कांइ अविधि कउउ हुइ
|सामायिक व्रतसहित| |जांलगइ मन नइ विषइ|

तेमविच्छामि मनवचनकायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं|| सामाइअवयजुत्तो|जावमणे
होइ नियमइं संयुक्त| |त्यांलगइ छेदइ अशुभकर्म| |सामाइक होइ जेतलीवार त्यांलगइ|५| सामाइकनइक

होइनिअमसंजुत्तो|छिन्नइअसुहंकम्मं|सामाइअजत्तिआवारा|४|सामाइअंमि
रिथकइ| |श्रमणसरिखउ श्रावक होइ| जेमाटइ| |एणइ कारणइ| |घणां| |सामाइककरवां|२||

उकए|समणोइवसावओहवइजम्हा|एएणंकारणेणं||बहुसोसामाइअंकुज्जा||

सामायिकविधिलीधुं विधिंपारिउं विधि करतां जि कांइ अविधि हुउ हुइ तस

| सूर्य ना उदय आरंभी बि घडी लगइ | उकार सहित | पचख्खउं |

विकुं मन वचन कायाइ करी मिछामिदुक्कडं ॥ ३ ॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्च

| च्यार प्रकार नु आहार | असन | पाणी | खादिम | स्वादिम | अजाणइ कांई मुखि घालिइ भंग नही ॥

क्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं

| सहसात्कारि मुखि पडि भंग नही | वोसिरावउं | २ | उदय सूर्य ना आरंभी सूर्य ना उगवाथी पहर लगइ पचख्खउं | च्यार प्रकार नु आहार |

सहस्सागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥ पोरिसिं पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आ

| असन | पाणी | खादिम | स्वादिम |

हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं ॥ १४

सूर्य वादलइं ढांक्यउ दिसनुं विपर्यास | साधु नी वाणी | सर्व प्रकारइं असमाधि | ते थकी | सूर्य ... [illegible]

पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ सूरे

| उदय थकी ... बि पहर लगइ पचख्खउं | चउविहार आहार | असन | पाणी | खादिम | स्वादिम | [illegible]

उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्था

| नही | सहसात्कारि मुखि ... | सूर्य वादलइं ढांकइ | दिसमोह | साधु वचन | ... | सर्व प्रकार ... | [illegible]

णाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमा

| ... | ३ | एकासनइ ... आहार करवउं | ... | तिविह आहार | [illegible]

हिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥ एगासणं बियासणं पच्चक्खामि दुविहं तिविहंपि आहा

| असन | खादिम | स्वादिम | अजाणतां कांई मुखि ... | सहसात्कारि ... | [illegible]

रं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं सागारिआगारेणं आउंटण

[illegible]

पसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागार

| ... | आयंबिल | पचख्खउं | अजाणतां कांई मुखि ... | सहसात्कारि ... | [illegible]

ेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवा

= नही पाणी ... [illegible] ४ ×

णेणं सिद्धसमसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वस-
माहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥ एकासणस्स पच्चक्खाति चउव्विहं पि आहारं असणं पा-
णं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं
पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स वा वोसिरामि॥६॥
सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खाति तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभो-
गेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाण-
हार॥ उग्गए सूरे पोरिसिं साढपोरिसिं सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खाति अन्नत्थणाभोगेणं ५५

सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-
गारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरामि
सूरे उग्गए चउत्थभत्तं अभत्तट्ठं पच्चक्खाति दिवसचरिमं पच्चक्खाति दुविहं तिविहं चउव्विहं पि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमा-
हिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥ गंठिसहियं पच्चक्खाति चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि
॥ विगईओ निविगईओ पच्चक्खाति अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्च-
महत्तरागारेणं लेवालेवेणं

नमस्किरणं पोरिसीवेणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तीआगारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥ दे

सावगासिअं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं ॥

सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि ॥ ९ ॥ फासिअं १ पालिअं २ सोहिअं ३ तीरिअं ४ किट्टिअं

५ आराहिअं ६ जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सचित्त १ दव्व २ विगई ३ वाणह ४

तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० बंभ ११ दिसि १२ न्हा

ण १३ भत्तेसु १४ ॥ इति श्री चउद नियम श्रावकना ॥ सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्वि २६

हं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणिआ

गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तीआगारेणं वोसिरामि ॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं

पोरिसिं पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा

भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तीआगारेणं

विगईओ पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खि

त्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तीआगा

रेणं बिआसणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं स

हसागारेणं सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिठावणिआगारे

णं।महत्तरागारेणं।सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं।पाणस्स लेवेण वा।अलेवेण वा।अछेण वा।ब
हुलेण वा।ससित्थेण वा।असित्थेण वा।दिसावगासीअं।उवभोगपरिभोगं पच्चक्खामि।अ
न्नत्थणाभोगेणं।सहसागारेणं।महत्तरागारेणं।सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं।वोसिरइ।सू
रे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं।असणं।खाइमं।साइमं।अन्नत्थणाभो
गेणं।सहसागारेणं।पारिठ्ठावणीआगारेणं।महत्तरागारेणं।सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं।
पाणाहार पोरिसिं साड्ढपोरिसिं सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खामि।अन्नत्थणाभोगेणं।सहसा २७
गारेणं।पच्छन्नकालेणं।दिसामोहेणं।साहुवयणेणं।महत्तरागारेणं।सव्वसमाहिवत्तिआगा

रेणं।पाणस्स वोसिरामि।नमुक्कारसी पोरिसि गंठसी करी चोविहार विआसणुं करसुं
तिविहार पच्चक्खाण फासिअं।पालिअं।सोहिअं।तीरिअं।कीटिअं।आराहिअं।जं च ना
राहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।पुरिमड्ढ करसुं चउविहार०।नमुक्कारसी पोरसी करसुं चउ
विहार०।वेआसण करसुं तिविहार पोरिसी साड्ढपोरिसी पुरिमड्ढ करसुं पाणहार पच्चक्खा

सिद्धांतनी अधिष्ठायका देवी सरस्वती तेह देवी भगवति। ते ज्ञानावरणी कर्म नो जे संघात समूह। तेहनो ... ते ...

ण फासिअं।सुअदेवया भगवई।नाणावरणीअकम्मसंघायं।तेसिं खवेउ सययं।जेसिं सु

... जिहां साधु ... दर्शन ज्ञान ... चारित्र सहित ... साधइ ... मोक्ष ... ते देवी ...

असायरे भत्ती।१।जीसे खित्ते साहू।दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं।साहंति मुक्खमग्गं।सा देवी हर

दुरित पाप ते हरो टालो। २ कमलदल ... कमल ... जेहना ... कमलनी ... जे देवी

उ दुरिआइं।२।कमलदलविपुलनयना।कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी।कमले स्थिता भ

सुअदेवियाए करेमि काउसग्गं -३-१

तेश्रुतदेवतासगवतीश्रम्हनइं २ मर्मीमिहिनइंदिउ

ज्ञानआदिगुणथीदर्शनचारित्र गुणतिणइंयुक्त छेइं

गवती दिसउ अम्हं देवता सिद्धिं २ भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ज्ञानादिगुणयुतानां नि

निरंतरसज्झायसंयममांहिरमइविहइ रक्त छइ | निपजावउ भुवननीअधि | कल्याणप्रतिनिरंतर समस्तसा | २ जेहदेवतानं नेत्रीक्षेत्र

त्यं स्वाध्यायसंयमरतानां विदधातु भुवनदेवी शिवं सदा सर्वसाधूनां २ यस्याः क्षेत्रं समा

रहीनइ | साधुचारित्रीइं साधीइं निपजा | क्रियासेचरणकरणगुण | थायो नः अम्हनइं सुखनीदेण ३

श्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नः सुखदायिनी ३ खित्तदेव

अढीद्वीपसमुद्रजे ढीपधातकीखं | तेमांहि जे पनरकर्मभूमिन | तिहांजेकेतलाइमहात

याए करेमि काउस्सग्गं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पनरससु कम्मभूमीसु जावंत केवि साहू

पात्रोछरण | धरणहार | अनइं पांचमहाव्रततणा धारक | अनइं पंचवीश्रढारसहस्रसीलांगतणा धरणहारछइं | अनइं आरव्र

रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारससहस्ससीलंगधारा अक्खुया

आचारचारित्र | तेसघलाइंनिजोदिइंमस्तकिमनिइकरीनइं

रचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि स्वामि नामांकपवासा वैयावच्चगरये व २८

तः स्पांतो रात्रसाश्रसुश्च वैयावच्चगरये वतः ४

ज्ञानतइं दर्शनतइ | चारित्रमइ तपनइ विरज तथा वीर्य्य आचरणं अतीचारे | इतिमोलसेदेसाणिकदिउ

नाणंमि दंसणंमि अ चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि आयरणं आयारो इय एसो पंचहा भणिओ

१ कालवेलाविनय बहुमान उपधान | तथाच गुरुनअपलाप | अक्षरसूत्र अर्थ सूत्रबिन्हु | एआठभेदेज्ञान

१ काले विणए बहुमाणे उवहाणे तह अनिन्हवणे वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो ना

चारकहीइ | २ निःशंकितपणुं निराकांक्षपणुं | फलप्रतिसंदेह अमूढदृष्टि | उपबृंहण | अस्थिरीकरणं

णमायारो २ निस्संकिअ निक्कंखिअ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ उववूह थिरीक

वात्सल्य प्रभावना | ३ त्रिविधपण ध्यानयोगयुक्त पांचसमिति त्रिणिगुप्ति सहित करइ

रणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ ३ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं एस

चारित्राचार | आठभेदे | ज्ञाणवउ | ४ बारप्रकारे | तप | अभ्यंतरि | बाह्य | कुशलदृष्टि | बोल

चरित्तायारो अट्ठविहो होइ नायव्वो ४ बारसविहंमि वि तवे सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे अ

ग्लानिरहित | आजीविका | जाणवउ | एतपाचार | ५ अणसण | ऊणोदरिका | वृत्तिसंक्षेप | रसत्याग

गिलाइ अणाजीवी नायव्वो सो तवायारो ५ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ झा

नपकाउस्सग्गादि | एअभ्यंतरतपछइ | ६ | उपवास | ऊणोदरिका २ | वृत्तिसंक्षेप ३ | रसत्याग

णं उस्सग्गो वि अ अब्भिंतरओ तवो होइ ६ अणसणमूणोअरिआ वित्तीसंखेवणं रसच्चा

४ कायक्लेश ५ संलीनता ६ ॥ प्रायश्चित्त ७ ॥ अनाश्रादि तत्र ॥ वीर्य ॥ प्रतिक्रमण नकरइ योय

३ कायकिलेसो संलीणयाय बज्झो तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहियबलविरिओ परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो
योग युक्त प्रयुञ्जइ यथा बलसद्भाव ॥ आलि वीर्याचार ॥ ८ ॥ इति अतीचार आलोचना गाथा

जुंजइ य जहाथामं नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति अतीचारगाथाष्टकं ॥

॥ नमस्कार श्रीमहावीर तीर्थंकर कर्मसिं ॥ कर्म

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं ॥ नमोऽर्हते वर्धमानाय स्पर्धमानाय कर्मणा तज्ज
मा जय श्रीमहावीर जिन ॥ १ ॥ येह ना विकसित कमल श्रेणि श्रेष्ठ पद कमल पंक्ति

यावाप्तमोक्षाय परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या ज्यायः क्रमकमलावलीं
धरमी ॥ सम्यक्त्वधर के मिजितवर प्रधान कहिवेहु कल्याणकारी तेसर्वज्ञ ॥ २ ॥ कोधादिक पीडित जीव

दधत्या सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतु
समाधिकरइ श्रीसर्वज्ञदेव ना मुख ... समान ... करो मतो प्रमाद ... ॥ १९

निर्वृतिं करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो दधातु तुष्टिं मयि

विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ विशाललोचनदलं प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य मुख
पवित्र करो ॥ २ ॥ जे हर्ति ॥ अभिषेक कार्य ॥ करी ॥ माता हर्ष ना ... सुखइं ॥ देवता ॥ तृणखला

पद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा मत्ता हर्षभरात्सुखं सुरेंद्राः तृणमपि
... नहीस्वर्ग ... ॥ ३ ॥ कलंक रहित ॥ ...

गणयंति नैव नाकं प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं
... ॥ नवलोचनं ... ॥ श्रीजिनचंद्र नो भाषित ॥ ... श्रीसिद्धांत ...

कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं दिनागमे नौमि बुधैर्नम
स्कारक ॥ ३ ॥ प्रभात ॥ ... श्रीतीर्थंकर

स्कृतं ॥ ३ ॥ वरकनकशंखविद्रुममरकतघनसन्निभं विगतमोहं सप्ततिशतं जिनानां

सर्वदेवताइपूजिआए। १। वंदिणा। अरिहंतप्रतिमानइवांदीनइ। सर्व सिद्ध प्रति वांदीनइ। धर्माचार्य प्रति वांदीनइ उपाध्याय प्रति वांदीनइ। सर्व साधु प्रति वांदीनइ। वांछउ पडिक्कमू।

सव्वमरहूजितवंदि १ वंदित्तु सव्वसिद्धे धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि

निवर्त्तवा। श्रावक धर्म नइ विषइ अतिचार लागा ते हुं पडिक्कमउं॥ १॥ जे मुझनइ व्रत आश्री अतीचार लागा। ज्ञाननइ विषइ तिम। दर्शननइ विषइ चारित्र नइ विषइ।

पडिक्कमिउं सावगधम्माइआरस्स॥१॥ जो मे वयाइआरो नाणे तह दंसणे चरित्ते अ

सूक्ष्म नान्हउ अथवा बादर मोटउ। तेह अतीचार निंदउं आत्मसाखि। तेह गुरु साखि॥ २॥ बिहु प्रकारइं परिग्रह आश्री अतीचार। सावद्य घणे प्रकारे जे

सुहुमो अ बायरो वा तं निंदे तं च गरिहामि॥२॥ दुविहे परिग्गहंमी सावज्जे बहुवि

आरंभ ते आश्री। अनेरा पाहि करावइ आप पइ करइ करी। पडिक्कमउं दिवस माहि लागा अतीचार सर्व॥ ३॥ जे कर्म बांधिउ पांचे इंद्रिये करी।

हे अ आरंभे कारावणे अ करणे पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥ ३॥ जं बद्धमिंदिएहिं

च्यारि कषाय। अप्रशस्त माठइ करी। रागइं करी अथवा द्वेषइं करी। ते कर्म ना अतीचार निंदउं गरहउं॥ ४॥ आग

चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं रागेण व दोसेण व तं निंदे तं च गरिहामि॥ ४॥ आ २०

सम्यक्त्व नइ अतीचार कहइ। अन्यतर अनइ बाह्य तप धर्म चित्त अनइ अचित।

... निर्गमन... बइसवा ... उभा रहइ बइसवा ... हालतां चालतां अण उपयोगइ ... राजादिक नइ परवशपणइ ... दिवस

गमणे निग्गमणे ठाणे चंकमणे अणाभोगे अभिओगे अ निओगे पडिक्कमे दे

संबंधीउ सर्व॥ ५॥ धर्मना फल विषइ संदेह ... असमाधि। तथा सम्यक्त्व आदि परिचउ मिथ्यात्वीनउ। ... मिथ्यात्वीनउ।

सिअं सव्वं॥ ५॥ संका कंख विगिच्छा पसंस तह संथवो कुलिंगीसु सम्मत्त

अतिचार। पडिक्कमउं दिवस संबंधि सर्व॥ ६॥ छकायनो आरंभ। पोतानइ राधिइ। परपइं राधाविइ।

स्सइआरे पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥ ६॥ छक्कायसमारंभे पयणे अ पयावणे

जे दोष। आत्मार्थि। परार्थि। उभय आपनइ परनइ। ते आत्मा निंदउं॥ ७॥ पांच अणुव्रत ना अतीचार।

अ जे दोसा अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे॥ ७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं

त्रिण गुणव्रत ना। अतीचार। च्यार शिक्षाव्रत ना अतीचार। ते पाप पडिक्कमउं दिवस संबंधीउ सर्व॥ ८॥

गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे सिक्खाणं च चउण्हं पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥ ८॥

पहिला अणुव्रत नइ विषइ | स्थूल जीव बेइंद्रीयादिक विषइ श्री प्राणिपातनी विरति थकी | आचरिउं | माठउं | इहां प्रमाद इं करी |

पढमे अणुव्वयंमी | थूलगपाणाइवायविरईओ || आयरिअमप्पसत्थे | इत्थपमा-

प्रसंगइं करी | ९ | वध जीव कनी प्रमुख | बंधन दोरी प्रमुखे | कर्ण नासिका छेदन | अतिभार घणु भार भरइ | भात पाणीनो नीषेध करयो | प्रथम व्रति

यप्पसंगेणं || ९ || वहबंधछविछेए | अइभारे भत्तपाणवुच्छेए || पढमवयस्स

अतीचार | पडिक्कमउं दिवससंबंधी सर्व | १० | बीजा अणुव्रत नइ विषइ | परिस्थूल मोटका असत्य | वचन |

इआरे | पडिक्कमे देसिअं सव्वं || १० || बीए अणुव्वयंमी | परिथूलगअलिअव-

विरति थकी | आचरिउं | माठुं | इहां प्रमाद नइं प्रसंग जगइ || ११ || सहसात्कारि अण विचार्यु |

यणविरईओ || आयरिअमप्पसत्थे | इत्थपमायप्पसंगेणं || ११ || सहस्सा

एकांत नी वात कहइ | कूडउ उपदेस दीधउ | कूडउ लेख लिखिउ | बीजा व्रतिइं पांच अतीचार | पडिक्कमउं दिवससंबंधी सर्व |

रहस्सदारे | मोसुवएसे अ कूडलेहे अ | बीअवयस्सइआरे | पडिक्कमे देसिअं २१

त्रीजा अणुव्रत नइ विषइ | स्थूल परद्रव्य हरण विरति थकी || आचरिउं माठउं सर्व धर्म नइ विषइ

सव्वं || तइए अणुव्वयंमि | थूलगपरदव्वहरणविरईओ || आयरिअमप्पसत्थे ||

इहां प्रमाद नइ प्रसंगइं करी || १३ || चोरी मुंकाइ आणु लीधुं | उपरि आनी पीमइ चोर नइ || रूडी वस्तुमां इहइ भेलइ | विरुद्ध राज्यमां जावुं ||

इत्थपमायप्पसंगेणं || १३ || तेनाहडप्पओगे || तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ||

कूडां तोल कूडां माप कीधा | पडिक्कमउं दिवससंबंधी सर्व | १४ || चउथा अणुव्रति || नित्य परस्त्रीगमन विरति थकी |

कूडतुलकूडमाणे || पडिक्कमे || १४ || चउत्थे अणुव्वयंमी | निच्चंपरदारगमण

| आचरिउं | माठउं | इहां प्रमाद नइं वलि गाइं || १५ || विधवा अपरिग्रहीत स्त्री | थोडा काल लगइ राखी परी |

विरईओ | आयरिअमप्पसत्थे | इत्थपमायप्पसंगेणं || १५ || अपरिग्गहिआइत्तर

कामक्रीडा | पर विवाह करवउं | तीव्र अभिलाषक रहितो तीनइ विषइ | चउथा व्रतना पांच अतीचार | पडिक्कमउं दिवससंबंधी सर्व १६ | चुथा | पांचमा |

अणंगवीवाहतिव्वअणुरागा | चउत्थवयस्सइआरे | पडिक्कमे || १६ || इत्तो अणु

|अणुव्रतविषइ| आचरं| अप्रसस्तपणइ| |परिमाणनोपरिछेद| |कीधा| |जेहोप्रमादनइ प्रसंगिकरी|

वय पंचमंमि| आयरिअ मप्पसत्थंमि| परिमाणपरिछेए| इत्थ पमायप्पसंगेणं|

१७| द्रव्य| धान्य रूडाघरहाट प्रमुख ४| रूपा ३ ५| सुवर्ण ६| त्रांबोकासादिक कुविय एहनोपरिमाणनइविषइ| मनुष्य ८| गाइप्रमुख ९|

१७| धणधन्नखित्तवत्थू| रूप्पसुवन्ने अ| कुविअ परिमाणे|| दुपए चउप्पयंमी||

पडिकमु दिवस संबंधी सर्व| १८| गमनजावानाप्रमाणनइ विषइ| दिसिविदिसि विषइ| ऊर्द्ध ऊंचु| अधो नीचु| तिर्यग्द्रौ ३| वृद्धि एककरइ|

पडिक्कमे| १८| गमणस्सउपरिमाणे| सोदिसुउढं अहे अ तिरिअं च| वुडिसइ

वीजीदिसिसंघ वधकरइ| पहिलइ गुणव्रतइ अतीचार निंदउ| १९| मदरामांसवर्जी असक्र २२|| अनंतकाय २२|| |फूलफलादिक| |गंध|

अंतरद्धा|| पढमंमि गुणव्वए निंदे| १९| मज्जंमिअ मंसंमिअ|| पुप्फे अ फले अ|

उष्पादिकमा लविषइ| उवभोगपरिभोगविषइ| बीजागुणव्रतविषइ पापनि दउं| २०| सचित्तप्रतिबंधविषइ २|

गंधमल्ले अ| उवभोगपरिभोगे| बीअंमि गुणव्वए निंदे| २०| सचित्ते पडिबद्धे|

२२

...पाकु नही १ ठड्डपक्व २ काचि| |अपक्वफलादिकनुभक्षण रइ आहारकरइ| पडिकमु दिवस संबंधी सर्व| इंगालीकर्म| वनक कर्म|

अप्पोलदुप्पोलिअं च आहारे| तुच्छोसहिभक्खणया| पडिक्कमे| २१| इंगालीवण

गाडादिक साडीकर्म ३| भाडाक रवी ४| सुरंगफोड कर्म| ए पंच कर्मन करइ| पांचवाणिज्य नकरइ| हस्तीदांत १| लाष २| रस ३| केसमंबरा ४| विषमंबंधी ५|

साडी| भाडी| फोडी सुवज्जए कम्मं| वाणिज्जं चेव दंतलक्ख| रसकेसविसविस

|२२|| इसीपरि| निछइं यंत्रपीडितकर्म| कर्णकंबलादि छेदनइ दावा नलदइ| सरोवरमोहुं पालिबंध| इहतलावसोसडुं

यं| २२| एवं खु जंतपिल्लण कम्मं| निल्लंछणं च दवदाणं| सरदहतलायसोसं|

असतीनापोषवर्जवा| |२३|| शस्त्र १ अग्नि २| मुशल ३| घरंटी ४ मुसल ४| बुहारी ५ मुष| जातिपराणइ प्रमुख| मंत्रमूलीकारपाणादिकऔषध|

असईपोसं च वज्जिज्जा| २३| सत्थग्गिमुसलजंतग| तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे

दिधा देवराव्या परव्रतिइं| पडिकमु दिवस संबंधीसर्व| २४|| न्हाण| उगटण ३| वंदन| विलेपनविधि| शब्द| रूप| रस|

दिन्ने दवाविए वा| पडिक्कमे| २४| ण्हाणुव्वट्टणवन्नग| विलेवणे सद्दरूवरस|

॥ए इगामि अ नाबोलइअ इकेकमाड

गंधनें । वस्त्र आसन आभरण विषइ । तेपडिकमुं दिवस । ॥२५॥ कंदर्पकारी । संख्येहा । मुखरीपणुं । अधिकरणनुं
मेलवुं । नीपनकीधउ ॥ । संबधी सर्व ॥ उद्वचन । ॥२॥ री पणउं । अवज्ञावजु

गंध ॥ वत्थासण आभरणे पडिक्कमे देसि ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए मोहरि अहिगर

भोगनिविषइ अतिरागे । एअनरथदंडनापांच अतीचार । त्रीजा गुणव्रतवि षइ । अतीचार निं दउं ॥ ॥२६ । मनवचनकायदुष्ट । ना चिंतवन ॥

णलोग अइरित्ते । दंडंमि अणट्ठाए तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणि

सामायिक अवज्ञा जेवुं । अवज्ञा आदरसहितपणउं । जेसुं नकर्युं । तिमसमृति सांभरवा । रहीत सूत्र लगइ । सामाइक एपांचइ करी । रूडउं कीधउं । पहिलि सिक्षाव्रतिपाप

हाणे अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितहकए पढमे सिक्खावए

निंदउं ॥२७॥ आणावी कांइ वस्तुपरिहरी । मोकलजी कांइ वस्तु । शब्द करइ । रूपदे खाडइ । पुद्गलक्षेप वेकांकरउ । अनुपनां घइ । एपांच अतीचार देसावका सिकव्रतइ ।

निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमी

बीजइ सिक्षाव्रति पाप निंदिउं ॥२८॥ अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारो अप्पमज्जीय दुप्पमज्जीय सिज्जासंथारे २ अप्पडीलेहि अदुप्पडीलेही ॥ तिमज पोसह लीधइ सांजना । दिकनी चिंता कीधी ए ॥

बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही [illegible] २३

५ अउच्चारपासवणभूमि अप्पमज्जीयदुप्पम ॥ [illegible]
[illegible] कीधउं

[illegible] विपरीत । त्रीजइ शिक्षाव्रति एपांच । निंदउं ॥ ॥२९॥ सचित्त उपरि मूकवु [illegible] [illegible]

[illegible] सहविहि विवरीए तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे [illegible]

मत्सरसहित । तहा मादिइ ॥ वेलावतिक्रमी दानदिइं । चउथइ शिक्षाव्रति अतिचार निंदउं ॥ ॥३०॥ सुखी अथवा दुखीनि ॥

च्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ ।

जे मइं असंजतीनइं विषइं भक्ति अथवा संयतनइ विषइ अनुकंपा दया कीधी ॥ रागइ अथवा द्वेषि करी । तेपाप निंदउं गरहुं । ॥३१॥ व्रतीआ किंइ सा धुव्रति ।

जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु सं

संविभाग । नकीधउ । तपवा रसोद । चरण सीतरी । करणसी तरी ॥ । एसहित जुइ जे साधु तेव्रतिधवतें प्रासुक छति संविभाग नकीधउ ॥ तेनिंदउं ॥ गरिहउं ॥ ॥३२॥

विभागो ॥ न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥

इहलोक नी वांछा । परलोक देव लोकनी वांछा । जीववुं वा । छिउ ॥ । मरण वांछा चघीरा घादिक विषइ । नी वांछ नाकीधी ॥ । एपांच विध अतीचार अण सणइ । मज्झ मुज व्रतें

इहलोए परलोए ॥ जीविअ मरणे अ आसंसपओगे ॥ पंचविहो अइआरो । मा मज्झं

इमरणांतलगइ॥ ३३॥ शरीरहतपापशरीरइ करे। अतिक्रमउवचनहतपापवचनिकरी। मनहतपापमनिं
उज्झ मरणंते॥ ३३॥ काएण काइअस्स पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा मा
इकरी। सर्वव्रतनाअतीचारपडिकमउं॥ ३४ वांदणा २। व्रता १। सिक्षा २। गारव ३। संज्ञा ४। कषाय ४
णसीअस्स॥ सव्वस्स वयाइआरस्स॥ ३४॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु। सन्नाकसाय
दंड ३। गुप्ति ३। समिति ५। जेअतीचारहूइतेनिंदउं छउं॥ ३५॥ सम्यक्दृष्टीजीव। यद्यपि
दंडेसु। गुत्तीसु अ समईसु अ। जो अइआरो अ तं निंदे॥ ३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो। जइ वि
पापसमाचरइ काइएक। तउहइअल्पबंधपापउहइ। जेहभणी नेहवाति नीध्रंधसपणउं नही॥ ३६॥ तेअल्पबंध
हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो। जेण न निद्धंधसं कुणइ॥ ३६॥ तं पि हु स
अतिक्रमविक सी। पश्चातापनि धरविकरी। प्रायश्चित्तकरविकरी। तेपापशीघ्रउतावलु उपशामावइ। जिमरोगनि वैद्यउपसमावइ।
पडिक्कमणं। सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ [illegible] २४

३७॥ जिमविषकोठामांगयु देही। मंत्रमूलीनाजाणडाहा। विद्यहणइ टालइ। मंत्रिकरी। तिवारपछीतनिर्विष हुइ।
३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं। मंत मूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं। तो तं हवइ निव्विसं
३८॥ इसीपरि आठविध आठ प्रकार नोकर्म। रागद्वेषिकरी सम्यक्प्रकारइ उपार्जियाहूइ। तेपापआलोतउ। निंदतउ थकउ। शीघ्रउतावलो कर्म वमइ। हणइ।
३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं। रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो॥ खिप्पं हणइ सु
सुश्रावक। ३९॥ हतपापहूतउजेमनुष्य॥ आलोचिवि निंदिवि गुरुसमीपिगुरुकहइ॥ हूइपापथकु लघु।
सावओ॥ ३९॥ कयपावो वि मणुस्सो। आलोइय निंदिय गुरुसगासे। होइ अइरेगल
अतिलघुहूइ जिमउतारइं भार भारवाहक। ४०॥ आवश्यकबएविधिंकरवि करी। श्रावकयद्यपि बहूजकर्म हूइ॥
हुओ। उहरिअभरुव्व भारवहो॥ ४०॥ आवस्सएण एएण। सावओ जई वि बहुरओ होइ॥
तउहइ दुःखनी अंतकीरी आगरइ। करइ। थोडाकालमाहिं॥ ४१॥ आलोचनाबहूप्रकारइ। पडिकमण।
दुक्खाणमंतकिरिअं। काही अचिरेण कालेण॥ ४१॥ आलोअणा बहुविहा॥ नयसंभ

वैताइ नसे नारइ। पांच मूल गुण सात उत्तरगुणनि वि षइ। । ते अतीचार निंदउ गरहउं ॥४२॥ । ते श्रावक धर्म प्रतइ

रिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे। तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स
केवलीनाकह्या प्रति। उद्यमवंत हउं छउं उठिउ छउं आ राधनानिमित्त। । विराधनाथी विरत जउं छुं। । त्रिविध प्रका रि। । प्रतिक्रमी करी

केवलिपन्नत्तस्स। अब्भुट्ठिओमि आराहणाए। विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कं
॥ वांदउं चउवीस जिन प्रति। ॥४३॥ जे तलां त्रिभुवन मांहिं चित्य ॥४४॥ । पनरह कर्मभूमि माहि जे । साधु ते वांदउं । ॥४५॥

«यणुकाव«
«मउ«

तो। वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं ॥४४॥ जावंत केवि साहू ॥४५॥
चिरसंचित पाप प्रणाशकरता। । लघ लाख सहस्र नी मथण हारी। । चउवीस जिननी नीपजावी कहीकथा

चिरसंचियपावपणासणीइ। भवसयसहस्समहणीए। चउवीसजिणविणिग्गय
तेणि। । अतिक्रमिउ तुम्ह उजु नइ दिवस पुर्व जउ। ॥४६॥ । मुज्झ प्रति इ एतला मंगलीक हुउ अरिहंत। । सिद्ध। साधु। सिद्धांत। अनइ धर्म।

कहाइ। वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता। सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। २५

सम्यक दृष्टि देव। । देउ समाधि बोधिलाभ। ॥४७॥ । जे प्रतिषेध्या ते करवा । ॥४८

सम्मद्दिट्ठी देवा। दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे। किच्चाणमकरणे पडि
हुं जउ। । असद्दहणा इ तिमज पडि क्कमवउं। । विपरीत परूपणाइ प्रतिप ॥ ॥४८॥ । हुं खमावउं सर्व जीव प्रति। । मुझ लोक हुइ जीव खमउ

क्कमणं। असद्दहणे अ तहा। विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे सव्वे जी
मोह रा अपरा धइ तइं। । मित्रीभाव मुझ नइं सर्व जीव विषइ। । वैरभाव किनहि सिउं ॥४९ । इसी परइं हुं गुरु आगलि आलोइ पडिक्कमी नइ। । निंदी आ तम साखिं। । प्रति अगुरु

वा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु। वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ गरि
साखिं। दुगंछि अ। सजी परइ। । मन वचन काया इं करी पा पथिक उ निवर्तइ। । चउवीस जिन नि वांदउं मंगलीक। ॥५०॥ इति श्रावक प्रतिक्रम कमणो।

हिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो। वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥ इति श्री श्रावक
णा सूत्र अर्थ संपूर्णः ॥ । नमस्कार विनो वीर उ अपार तिमि थीन इं। । नमस्कार अक्षमा श्रमण माहात्म्य नइं। । गौतमादिक। ॥ मोटा मुनीश्वर नइ

पडिक्कमणसुत्तं संपूर्णं। तित्थाहीव वीरवद्धमाणसामिणं। गोअमाईणं महामुणीणं।

ओसय मान॥

। वडामहात्मा आदेशदिउ। । आज्ञा उत्तो पोसाजमां हि।

नमो अरिहंताणं। [illegible] ॥ अणुजाणह जिट्ठिज्जा॥ अणुजाणह प

वडागुरु। । गुरु आ ऊ गुणरूपी। यारत्नतेहिं करी। मंडित सिरीर जेहना। । ईमहूना घोडि सि जणी पोरिसि॥। । रात्रिनां संथारानि विषइ ठाउं।

रमगुरु। गुरु गुण रयणेहिं मंडिअ सरीरा। बहु पडिपुन्ना पोरिसि। राई संथारए ठामि

५॥ अनुज्ञा दिउ मुझनई संथा सं। । हाथनइं ऊसी। सइ। । डावइ पासइं से थारु। । कूकडीनी परइं पग पसारी॥ इ म करीन सकुं। ऊंचा लांबा करी

५ अणुजाणह संथारं। बाहुवहाणेणं वामपासेणं। कुक्कुडिपायपसारण। अंतरं

उ जइ सउजीपुंजवसा। २। संकोचीसंडासा प्र उं। पासइं घाउ कायानी पडिलेहण करु। जागिइ थकइ द्रव्या दिक ध्यस लारु।

तपमज्जए भूमिं। ३। संकोइअ संडासा॥ उव्वट्टंत अ कायपडिलेहा। दव्वाई उवओगं॥

इ म जोनी जाप उड म तु सास ऊसास। ३॥ । जो माहरा जीवनइ ऊइ प्रमाद मरणं॥ । जेह ना एदेह नइं ए रात्रि माहि मरण ऊप जइ तउ॥ । त्यारइ आहार।

कधीप कइ दिसा लोक कीजइ॥

ऊसासनिरुंभणालोए। ३। जइ मे हुज्ज पमाउ॥ इमस्स देहस्स [illegible] इमाइ रयणीए। आहार २६

उपगरण आ स्त्री आहार। सर्व परिग्रह मन वचन काया करी वोसिरावउं। ४ च्यार मंगलीक प दिख्युं तेके हा। अरिहंता मंग लीक १ वीजुं सिद्ध मं गलीक २ त्रीजुं स ...

मुवहिदेहं सव्वं तिविहेण वोसिरिअं॥ ४ चत्तारि मंगलं। अरिहंता मंगलं। सिद्धा मंगलं। साहू

लीक ३। केवली भाख्यु धर्म मंगली क ४ वउ ४। ५ च्यार लोक माहि उ त्तम ते कि हा क हीइ। अरिहंत लोक माहि उत्तम १। सिद्ध लोक मां हि उत्तम २।

मंगलं। केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं। ५ चत्तारि लोगुत्तमा। अरिहंता लोगुत्तमा। सिद्धा लोगुत्त

साधु लोक माहि उत्तम ३। केवली भाख्यु धर्म लोक माहि उत्तम ४। ६ च्यार सरणा पडिवज्जुं कि हा ते कहीइ। अरिहंतनुं सरण पडि

मा। साहू लोगुत्तमा। केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा। ६ चत्तारि सरणं पवज्जामि। अरिहंते स

वज्जुं आदरुं १। सिद्धनउ सरण पडि वजुं २। साधुनउ सरण पडि वजुं ३। केवली भाख्यु धर्म तेह नुं सार

रणं पवज्जामि। सिद्धे सरणं पवज्जामि। साहू सरणं पवज्जामि। केवलिपन्नत्तो धम्मो सरणं

लिपडिव जुं ४। ७। जीवनी हिंसा आरंभा दिकिं करी ज्जूठ बोलि वउ २। चोरी क रवी ३। मेथुन सेववुं ४। द्रव्यादिकनी मूर्च्छा परिग्र ह ५। क्रोध ६। मान ७। माया ८। लोभ ९

पवज्जामि। ७ पाणाइवायमलियं। चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं। कोहं। माणं। मायं। लोभं।

27

राग १० | तिम | द्वेष ११ | ८ | कलह १२ | आलदेवुं १३ | चाडीकरवी १४ | रति अधर्मनी करणी इं अरति धर्मनी करणी इं १५ | अनेरानो दोष बोलवा १६ | मायासहित मृषा बोलवो

पिज्जं तह दोसं ८ कलहं अब्भक्खाणं पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं परपरिवायं माया मो

मृषा १७ | मिथ्यात्वरूप साल १८ | ९ | ए अढार पापस्थानक | किमा छइं जे मोक्षमार्गि जावा अंतरा विघ्ननां करनारा छे | ए सूत्र कहइं | दुर्गतिनां बंधन कारण

स मिच्छत्तसल्लं च ९ वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्ग संसग्गविग्घभूआइं दुग्गइनिबंध

कहइं | ए अढार पापस्थानक वासिरु आव्हइं | १० | एकलउ हूं माहरउ को इं नथी देखाथ | हूं अनेरानुं नथी कोइंनुं | इसी परिं अदीन मनवइराग्य

णाइं अट्ठारस पावठाणाइं १० एगोहं नत्थि मे कोइ नाहमन्नस्स कस्सइ एवमदीणम

यपणि | आपणा आत्मानें सीखदीइं इसी परइं | ११ | एक माहरु शाश्वतु आत्मा | ज्ञान दर्शन चारित्रे करीने सहित छइं | बाकी माहरइं सर्व बाह्यभाव

णसो अप्पाणमणुसासए ११ एगो मे सासओ अप्पा नाणदंसणसंजुओ सेसा मे बाहिरा

पुत्रकलत्रादिकरूप बाह्य सर्व संयोगना लक्षण ज्ञानादिक पदार्थ बाह्याकार सर्वे से | ए संयोग लक्षण छइं १२ संयोगमूलथी जीवि छइं | अनेक दुःखनी परंपरा पामीइं | तेह भणी संसारना संयोगनुं संबंध

भावा सव्वे संजोगलक्खणा १२ संजोगमूला जीवेण पत्ता दुक्खपरंपरा तम्हा संजोगसंबं २७

सर्व मन वचन कायाइं करी वोसिरावुं | १३ | अरिहंत माहरइं देव | अनइं जावज्जीव सुसाधु माहरइं गुरु | अनइं जिनइं परूपिउ

धं सव्वं तिविहेण वोसिरि १३ अरिहंतो मह देवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो जिणप

जीवदया धर्म | इ सम्यक्त्व मइं लीधुं ग्रहिउं निश्चल मनइं करी | १४ | इति श्री संथारा रात्रि पोरसी विधि संपूर्णः | कल्याणनउ यशवंत मंगल श्रीसंघ

न्नत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं १४ इति श्री राइसंथारा पोरिसी सूत्र संपूर्णं श्रीरस्तु

च्यार कषायरूप प्रतिमल्ल योद्धा नइं टालणहार दोहिलउ जीत्यो जाइ | कंदर्प | तेहना बाणनउ टालणहार | सरस प्रियंगु मामइं वेल नीलवर्ण छइं जेहनो | गजनी सरिषी गतिछइं जेहनी

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु दुज्जय मयण बाण मुसुमूरणु सरस पियंगु वन्नु गयगामि

जयवंत वरतउ | त्रिभुवननुं स्वामी पार्श्वनाथ नील वर्ण | २ | जेहना शरीरनी कांतिनुं | आकंब समोह रछइ | शोभइं छइं | फणनी मणि

उ जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ १ जसु तणुकंति कडप्प सिणिद्धउ सोहइ फणमणि कि

किरणइं व्याप्त | मेघ नवउ जेहवो वीजलीनी लताइं सहित ते जिन पार्श्वनाथ दिउ वांछितसुख | २ | इति चैत्यवंदनं

रणालिद्धउ नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ २ इति चैत्यवंदं

इच्छाकार सर्व किहेसो भगवन् प्रसाद करी प्रासुक वस्तु सूझतां भइं | असन | पान | खादिम | स्वादिमादिक आहार

इच्छाकारे भगवन् पसाउ करी फासूएणं एसणिज्जेणं असण पाण खादिम साइमेणं 28

वस्त्र | पात्र || कंबल || पादपुंछनादिक || पाडिहारयस्क पाटला बाजोठ | पाटीउं | पाट || संस्तारक || औषध | वस्तादिक

वथपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं | पाडिहारीयपीढफलगसिज्जासंथारेणं उसहभेसज्जे

हे भगवन अनुग्रह करवउ मुझ ऊपरि १ | इति गुरुवंदनादि विधिः || बाजउ | हे क्षमाश्रमण || इच्छकारेण भगवन

णं | भयवं अणुग्गहो कायव्वो | १ इति वंदनकविधिः | इच्छामि खमासमणो ० इच्छाकारेण सं

आदेश दिउ | चैत्यवंदना निमित्त | करउ | बाजउ | देवाधिदेव नउं दर्शन पाप नो विनाश करइ दर्शन देखाइ लहइ स्व

दिसह भगवन् चैत्यवंदनं करेउं इच्छं | दर्शनं देवदेवस्य | दर्शनं पापनाशनं | दर्शनं स्वर्गसोपा

र्ग सोपान उ दर्शन मोक्ष पामी १ | जिनेंद्र ना दर्शन करी | साधु नइ वंदन करी | नरहइ | चिरकाल ना पाप | छिद्र हस्ते

मोक्षसाधक
नं दर्शनं मोक्षसाधनं | १ दर्शनाज्जिनेंद्राणां साधूनां वंदनेन च | न तिष्ठति चिरं पापं छिद्रह

जिम पाणी | २ | [illegible]

स्ते यथोदकं | २ पश्यंतो लोयानि निबिडानि तानि निबिडानि निर्हतेजः सुयुगपद्भयानि निबिडानि तानि नि

[illegible] ३ | आज मइं पणि जिन शरीर | नेत्र निर्मल कीधां | सर्व पाप थकी मुक्त हूउ | हे जिनेंद्र ताहरा

दं निरंतरं | ३ अद्य प्रक्षालितं गात्रं | नेत्रे च विमलीकृते | मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो | जिनेंद्र तव दर्श

दर्शन थकी | सोना सरीखा वर्ण छे जेहनो हाथी ना | [illegible] | मनुष्य राजा देवता ना राजाइं स

कउ ४ | सरीखी चाल छे जेहनी | [illegible] | [illegible]

नात् | ४ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं | प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनं | नरामरेंद्रैः स्तुतपाद

२८

युगम जेह | नमामि | [illegible] | हे देव ताहरा दर्शन थकी दुस्तर संसार सुखि [illegible] | आज

पंकजं | नमामि सन्नाथिसेन जिनोत्तमं | ५ दर्शनादेव ते नाथ | दुस्तरोपि सुखोत्तर | अद्य

[illegible] | ६ | स्वामी ताहरा मुख कमल | [illegible]

ग्राहोपि पेंडितो | जानुदघ्नो भवेदब्धि | ६ दृष्टेतु त्वन्मुखकमले | तिन्निप्पणठाइं निरवसेसा

दारिद्र मरण भय | जन्मांतर संचित पाप कर्म | ७ | [illegible] | सिंहासन [illegible] | परिवा

इं दारिद्दमरणसयं | जम्मंतरसंचियपावं | ७ संखुन्नचेदवयणा | सीहासणसंठियस

र सहित | [illegible] | जिनचंद | कहितउ [illegible] धर्मसमोसर | ८ | [illegible]

परिवारो | कायव्वो जिणचंदो | दिसंतो धम्मसमोसरणे | ८ जय महायस | जय महाभाग | ज

[illegible]

य चिंतियसुहफलदय | जयसमत्थपरमट्ठजाणय | जयगुरुगरिमगुरु | जय दुहत्तसं

[illegible]

ताणताणय | थंभणयट्ठियपासजिण | भवियत्ताणंभवच्छ | नयणंतानंतगुण | तुज्झ ति

[illegible] | ९ | [illegible] नाम तीर्थ | स्वर्गि | पाताल | मनुष्य लोक माहि | जे जिन बिंब छइ | ते सघलांइ हुं

संझं नमो | ९ जं किंचि नाम तित्थं | सग्गे पायालि माणुसे लोए | जाइं जिणबिंबाइं ताइंस

29

सदार्थ ॥ ४० ॥
ग्रंथसंख्या ४०॥